ISSN - 2348-2397
APPROVED UGC CARE
LIS

SHODH SARITA

SHODH SARITA
Vol. 7, Issue 28, October-December, 2020
Page Nos. 169-172

AN INTERNATIONAL BILINGUAL PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL

विशेष पिछड़ी जनजाति बैगा की सांस्कृतिक मान्यताओ का स्वास्थ्य पर प्रभाव : एक अध्ययन छत्तीसगढ़ राज्य के कबीरधाम जिले के विशेष संदर्भ मे

अंजली यादव*
डॉ0 एस. एल. गजपाल**

शोध सारांश

प्रस्तुत शोध अध्ययन छत्तीसगढ़ राज्य की विशेष पिछड़ी जनजाति बैगा पर आधारित है। शोध अध्ययन कबीरधाम जिल के बोड़ला विकासखण्ड़ के 7 ग्रामो पर केन्द्रित है। अध्ययन गत क्षेत्र के 277 परिवारो पर अध्ययन किया गया है। शोध अध्ययन मे तथ्य संकलन हेतू प्राथमिक तथ्य संकलन साक्षात्कार अनुसूची एंव अवलोकन प्रविधि के द्वारा किया गया है। अध्ययन के माध्यम से इस तथ्य को ज्ञात करने का प्रयास किया गया है कि वैश्विक परिदृश्य मे आदिम जनजाति बैगा के सांस्कृतिक मान्यताओ का स्वास्थ्य पर क्या प्रभाव पड़ रहा है तथा उनकी स्वास्थ्य से जुड़ी समस्यांए किस रूप मे है? अध्ययन से यह ज्ञात हुआ है कि बैगा जनजाति की जनसंख्या 1991 मे 2,43,349 से घटकर 2011 मे 1,31,425 हो गया है।लगभग 48 प्रतिशत की गिरावट देखी गयी है। स्थिति का आंकलन करे तो विगत तीन दशको मे इनकी संख्याओ मे गिरावट आयी है। ऐसे मे बैगाओ के स्वास्थ्य समस्या का अध्ययन अत्यन्त महत्वपूर्ण है। बैगाओ मे जड़ी बूटी औषधी का विषेश ज्ञान होते हुए भी उनकी स्वास्थ्य समस्या एक चिंतनीय विषय है।

Keywords : बैगा जनजाति , स्वास्थ्य समस्या, जनसंख्या संक्रमण

बैगा जनजातियो मे जनसंख्या संक्रमण के विषय में स्वास्थ्य संबंधी अनुभवजन्य तथ्य –

जनजातियों में शिक्षा के अभाव के कारण स्वास्थ्य समस्या से वह सभी अनभिज्ञ रहते है वह अपने व अपने परिवार के स्वास्थ्य पर बिल्कुल भी ध्यान नही देते है। अध्ययन से यह तथ्य सामने आया है कि जनजातिय समूह कुपोषण, मलेरिया, दस्त, पीलिया, डायरिया आदि बीमारियों से ग्रसित रहते है। जिससे की उनकी मौत भी हो जाती है। क्योकि वह इस बीमारी से लम्बें समय तक ग्रसित रहते है और उन्हें जानकारी भी नही रहती है।[1] साफ–सफाई में जनजातिय समूह विशेश रुचि नही लेते है। गंदा पानी, पीना ,कपडो का गंदा रहना , चप्पल–जूतो का प्रयोग कम या कुछ जनजाति ही प्रयोग करते है। अधिकांश बैगा जनजाति जूते और चप्पलों का इस्तेमाल नही करते है जिससे उनके पैरो पर घाव होना स्वाभाविक है। फिर धीरे–धीरे घाव का संक्रमण पूरे शरीर में फैलता है और वह कई अन्य बीमारियों से ग्रसित हो जाते है। छोटे बच्चों में खासकर निमोनिया संबंधी समस्या पायी जाती है। गर्भधारण के समय महिलाओं के खान–पान का विशेश ध्यान नही दिया जाता है। जिससे बच्चों जन्म से ही कमजोर होते है और कुपोषित होने की सम्भावनाएँ बढ जाती है।[2] गर्भधारण के समय एवं गर्भधारण के पश्चात शिशु और माता दोनो को किसी विशेश परिवेश में नही रखा जाता है, जिससे कि माता के खान–पान एवं शिशु के देखभाल में किसी भी विशेश प्रकार का ख्याल नही रखा जाता है। इसका सबसे पमुख कारण अशिक्षा है। अशिक्षित होने के कारण जनजातिय समूहों में गर्भधारण एवं शिशु के जन्म के बाद देखभाल किस प्रकार करना चाहिए यह उन्हे ज्ञात ही नही होता है।[3]

महिलाओं को स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखना चाहिए किन्तु अशिक्षित होने की वजह से अपनी शारिरिक समस्याओं को साझा करने में शर्माती है और महिलाओं को गंभीर बीमारियां घेर लेती है और कभी–कभी संक्रमण अत्यधिक होने पर मृत्यु भी हो जाती है। अधिकांश महिलाओं की मृत्यु अत्याधिक संक्रमण के फैलने से होती है तथा पुरुषों में भी यही स्थिति बनी रहती है वह शर्मदींगी में कुछ भी नही बोल पाते है। सामान्यतः ऐसा पाया गया है कि जनजातिय समूहों में जनजातिय महिलाए और कम उम्र की बालिकाओं को सेनेटरी नेपकिन का प्रयोग नही करती है वह आज भी प्राचीन समय के जैसे ही मासिक धर्म में कपडा व अन्य चीजो का प्रयोग करते है। जिससे उनमें संक्रमण होना स्वाभाविक है। सामान्यतः पाया गया है। जनजातियों में वह किसी प्रकार की साफ–सफाई को अन्यथा में लेते है। जनजातियों में पशु पालन करना जीवन–निर्वाह के लिये आवश्यक है। उरांव व बैगाओं में

*शोधार्थी – समाजशास्त्र एवं समाज कार्य अध्ययनशाला, पं. रविशंकर विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)
**एसोसिएट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष – समाजशास्त्र एवं समाजकार्य अध्ययनशाला, पं. रविशंकर विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)

PRINCIPAL,
GOVT. ENGINEER VISHWESARRAIYA
P. G. COLLEGE, KORBA (C. G.)

GOVT. E.V.P.G. COLLEGE KORBA